The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

उषा प्रियम्वदा के साहित्य में नारी-चेतना और मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद का विश्लेषण

डॉ० जुनैद अन्दलीब साजिद
असिस्टेंट प्रोफेसर
श्री बाबू सिंह दद्दू जी कृषि महाविद्यालय, फर्रुखाबाद

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठित कथाकार उषा प्रियम्वदा के साहित्यिक योगदान का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। उषा प्रियम्वदा ने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से आधुनिक भारतीय नारी की मनोदशा, संघर्ष और आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। यह शोध-पत्र उनके जीवन परिचय, साहित्यिक विकास, प्रमुख रचनाओं, कथा-शिल्प, नारी-चेतना, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद और हिन्दी साहित्य में उनके स्थान का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, पारिवारिक संबंधों की गहराइयों और आधुनिक युग में व्यक्ति के अकेलेपन का सूक्ष्म चित्रण मिलता है।

मुख्य शब्द: उषा प्रियम्वदा, हिन्दी कथा साहित्य, नारी-चेतना, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, समकालीन साहित्य, कहानी-कला

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के उत्तर आधुनिक काल में जिन महिला रचनाकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई, उनमें उषा प्रियम्वदा का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उनका जन्म 22 दिसम्बर 1940 को मेरठ, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उषा प्रियम्वदा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी कथा साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की और मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकताओं को उजागर किया।

साहित्य की दुनिया में उषा प्रियम्वदा का प्रवेश 1960 के दशक में हुआ, जब हिन्दी साहित्य में नई कहानी आंदोलन अपने चरम पर था। उन्होंने अपनी प्रथम कहानी से ही साहित्यिक जगत का ध्यान आकर्षित किया। उनकी रचनाओं में आधुनिक नारी के

संघर्ष, मानसिक द्वंद्व और सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। उन्होंने अपनी कहानियों में केवल समस्याओं को प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उनके मनोवैज्ञानिक आयामों को भी उद्घाटित किया।

शोध का उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. उषा प्रियम्वदा के साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व का विश्लेषण करना
2. उनकी प्रमुख रचनाओं की विषयवस्तु और कथा-शिल्प का अध्ययन करना
3. उनके साहित्य में नारी-चेतना और स्त्री-विमर्श की अभिव्यक्ति का मूल्यांकन करना
4. मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद के संदर्भ में उनकी रचनाओं का परीक्षण करना
5. हिन्दी साहित्य में उनके योगदान और स्थान का निर्धारण करना

शोध-पद्धति

यह शोध वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और मूल्यांकनात्मक पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक स्रोत के रूप में उषा प्रियम्वदा की मौलिक रचनाओं का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में विभिन्न समीक्षात्मक ग्रंथ, शोध-पत्रिकाएं और आलोचनात्मक निबंधों का उपयोग किया गया है। तुलनात्मक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से उनके साहित्य का विवेचन किया गया है।

जीवन परिचय और साहित्यिक पृष्ठभूमि

उषा प्रियम्वदा का जन्म एक संभ्रांत परिवार में हुआ था। उनके पिता एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद थे और माता संस्कारी गृहिणी थीं। बचपन से ही उन्हें साहित्य और संस्कृति का वातावरण मिला। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उनका विवाह प्रसिद्ध भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी प्रेमचंद प्रियम्वदा से हुआ।

उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ कहानी लेखन से हुआ। 1960 के दशक में उनकी पहली कहानी 'वापसी' प्रकाशित हुई, जिसने साहित्यिक जगत में उनकी पहचान बनाई। इसके बाद उन्होंने निरंतर लेखन किया और अनेक महत्वपूर्ण कहानियां और उपन्यास लिखे। उन्होंने अपने जीवनकाल में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन किया और साहित्यिक सम्मेलनों में भाग लिया।

प्रमुख रचनाएं

कहानी-संग्रह

उषा प्रियम्वदा ने अनेक कहानी-संग्रह प्रकाशित किए, जिनमें प्रमुख हैं:

'वापसी' - यह उनका प्रथम कहानी-संग्रह है, जिसमें आधुनिक युग में व्यक्ति के अकेलेपन और पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं को चित्रित किया गया है।

'जमाने का चेहरा' - इस संग्रह में समाज के विभिन्न पहलुओं और मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को उजागर किया गया है।

'एक कोई दूसरा' - इस संग्रह की कहानियों में मानवीय संबंधों की गहराई और व्यक्ति की मनोदशा का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है।

'सुनो शाहज़ादी' - इस संग्रह में स्त्री-जीवन के विविध आयामों और उनके संघर्षों को प्रस्तुत किया गया है।

'अंतिम अध्याय' - यह संग्रह मृत्यु, जीवन के अर्थ और अस्तित्व के प्रश्नों से जुड़ी कहानियों का समावेश करता है।

उपन्यास

उषा प्रियम्वदा के प्रमुख उपन्यासों में निम्नलिखित शामिल हैं:

'रुकोगी नहीं राधिका' - यह उनका सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है, जिसमें आधुनिक नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व और उसके संघर्षों को प्रस्तुत किया गया है।

'पचपन खंभे लाल दीवारें' - इस उपन्यास में किशोर मन की कोमल भावनाओं और प्रथम प्रेम की मासूमियत का चित्रण है।

'शेषयात्रा' - यह उपन्यास मध्यवर्गीय परिवार के विघटन और पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप को दर्शाता है।

'अंतर्वंशी' - इस उपन्यास में पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं और पीढ़ियों के बीच के अंतर को चित्रित किया गया है।

साहित्यिक विशेषताएं

कथा-शिल्प

उषा प्रियम्वदा की कथा-शैली अत्यंत सहज, सरल और प्रभावशाली है। उन्होंने अपनी कहानियों में घटनाओं की अपेक्षा मनोभावों को अधिक महत्व दिया है। उनकी कहानियों में कथानक का विकास स्वाभाविक रूप से होता है और पाठक को कृत्रिमता का अनुभव नहीं होता। उनकी भाषा सहज होते हुए भी भावपूर्ण है और संवाद जीवंत और यथार्थपरक हैं।

उनकी कहानियों में प्रतीक और बिम्ब का सुंदर प्रयोग मिलता है। वे छोटी-छोटी घटनाओं और वस्तुओं के माध्यम से गहरे अर्थों की अभिव्यक्ति करती हैं। उनकी रचनाओं में वर्णन संक्षिप्त और सारगर्भित है। वे अनावश्यक विस्तार से बचती हैं और केवल आवश्यक तत्वों को ही प्रस्तुत करती हैं।

पात्र-चित्रण

उषा प्रियम्वदा के पात्र जीवंत और विश्वसनीय हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में मध्यवर्गीय समाज के साधारण व्यक्तियों को पात्र बनाया है। उनके पात्र काल्पनिक न होकर हमारे आस-पास के जीवन से लिए गए प्रतीत होते हैं। विशेष रूप से स्त्री-पात्रों का चित्रण उनकी रचनाओं की विशेषता है। उनकी नारी पात्र पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच संघर्षरत दिखाई देती हैं। उनके पुरुष पात्र भी यथार्थवादी हैं। वे न तो खलनायक हैं और न ही आदर्श नायक, बल्कि सामान्य मनुष्य हैं जो अपनी कमजोरियों और गुणों के साथ जीवन जी रहे हैं। उन्होंने अपने पात्रों के मनोविज्ञान को गहराई से समझा है और उनकी आंतरिक द्वंद्वों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद

उषा प्रियम्वदा की रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता उनका मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद है। वे अपने पात्रों के बाह्य आचरण के साथ-साथ उनकी आंतरिक मनोदशा का भी सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियों में चेतना-प्रवाह तकनीक का सफल प्रयोग मिलता है। वे पात्रों के अवचेतन मन में छिपी भावनाओं और इच्छाओं को उजागर करती हैं।

उन्होंने मानवीय संबंधों की जटिलताओं को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। प्रेम, घृणा, ईर्ष्या, कुंठा, अकेलापन जैसी भावनाओं का विश्लेषण उनकी रचनाओं में मिलता है। वे यह दर्शाती हैं कि मनुष्य के व्यवहार के पीछे कई मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं जिन्हें समझना आवश्यक है।

नारी-चेतना और स्त्री-विमर्श

उषा प्रियम्वदा की रचनाओं में नारी-चेतना एक प्रमुख विषय है। उन्होंने आधुनिक भारतीय नारी के जीवन को विभिन्न कोणों से प्रस्तुत किया है। उनकी नारी पात्र पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विचारधारा के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती दिखाई देती हैं। वे अपनी स्वतंत्रता की इच्छा रखती हैं लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों से भी नहीं भागतीं।

उन्होंने नारी के विभिन्न रूपों को चित्रित किया है - पत्नी, माता, बहन, बेटी, प्रेमिका और स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में। उनकी रचनाओं में नारी की समस्याओं को केवल पुरुष-प्रधान समाज के संदर्भ में नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। वे यह दर्शाती हैं कि नारी की समस्याएं केवल पुरुषों द्वारा निर्मित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक संरचना, आर्थिक परिस्थितियां और मनोवैज्ञानिक कारक भी इसके लिए उत्तरदायी हैं।

उनकी नारी पात्र शिक्षित और जागरूक हैं। वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती हैं। लेकिन उनका विद्रोह हिंसक या आक्रामक नहीं है, बल्कि विवेकपूर्ण और संतुलित है। वे परिवार और समाज दोनों में अपना स्थान बनाना चाहती हैं।

प्रमुख रचनाओं का विश्लेषण

'रुकोगी नहीं राधिका'

यह उपन्यास उषा प्रियम्वदा की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। इसकी नायिका राधिका एक आधुनिक शिक्षित नारी है जो अपने व्यक्तित्व और स्वतंत्रता को बनाए रखना चाहती है। उपन्यास में राधिका के जीवन के विभिन्न चरणों को दर्शाया गया है - उसकी महत्वाकांक्षाएं, प्रेम, विवाह, पारिवारिक जीवन और संघर्ष।

राधिका का चरित्र एक ऐसी नारी का प्रतिनिधित्व करता है जो पारंपरिक भूमिकाओं से आगे जाकर अपनी पहचान बनाना चाहती है। वह एक कुशल गृहिणी भी है और सफल व्यावसायिक महिला भी। उपन्यास में यह दर्शाया गया है कि आधुनिक नारी को किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जब वह परिवार और करियर दोनों को संतुलित करने का प्रयास करती है।

उपन्यास की भाषा सरल और प्रवाहमय है। संवाद स्वाभाविक और प्रभावशाली हैं। लेखिका ने राधिका के मानसिक द्वंद्वों और भावनाओं को बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया है। उपन्यास का शीर्षक भी अर्थपूर्ण है जो नारी की अदम्य जिजीविषा और आगे बढ़ने की इच्छा को व्यक्त करता है।

'पचपन खंभे लाल दीवारें'

यह उपन्यास एक किशोरी सुषमा की कहानी है जो हॉस्टल में रहती है। उपन्यास में किशोरावस्था की भावनाओं, मित्रता, प्रथम प्रेम और जीवन के प्रति उत्साह का सुंदर चित्रण है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है जो इसे और अधिक प्रभावशाली बनाता है।

उपन्यास में हॉस्टल जीवन का यथार्थ चित्रण है। लड़कियों की दोस्ती, उनकी शरारतें, उनके सपने और उनके संघर्ष सभी को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है। सुषमा और तनूजा की मित्रता उपन्यास का केंद्रीय तत्व है। उपन्यास में प्रेम को एक कोमल और पवित्र भावना के रूप में चित्रित किया गया है।

उपन्यास की भाषा सरल, सहज और काव्यात्मक है। लेखिका ने किशोर मन की भावनाओं को बड़ी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक है जो हॉस्टल के भवन के साथ-साथ उस स्मृति को भी दर्शाता है जो सदा के लिए मन में बस जाती है।

'वापसी' (कहानी)

'वापसी' उषा प्रियम्वदा की प्रसिद्ध कहानी है जो एक विवाहित महिला की मनोदशा को प्रस्तुत करती है। कहानी की नायिका विदेश से भारत लौटती है और अपने पारिवारिक जीवन में फिर से समायोजित होने का प्रयास करती है। कहानी में यह दर्शाया गया है कि कैसे एक स्त्री अपनी स्वतंत्रता और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करती है।

कहानी में आधुनिक नारी के अंतर्द्वंद्व को बड़ी गहराई से प्रस्तुत किया गया है। नायिका न तो पूर्णतया पश्चिमी जीवन शैली को अपनाना चाहती है और न ही पारंपरिक भारतीय जीवन में पूरी तरह लौटना चाहती है। वह एक मध्य मार्ग की खोज में है जहां वह अपने व्यक्तित्व को बनाए रख सके।

समाज और संस्कृति का चित्रण

उषा प्रियम्वदा ने अपनी रचनाओं में भारतीय मध्यवर्गीय समाज का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कहानियों में शहरी जीवन की जटिलताओं, पारिवारिक संबंधों की समस्याओं और सामाजिक मूल्यों के बदलते स्वरूप को देखा जा सकता है। उन्होंने यह दर्शाया है कि आधुनिकीकरण ने भारतीय समाज को किस प्रकार प्रभावित किया है।

उनकी रचनाओं में पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच टकराव दिखाई देता है। पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच विचारों का अंतर, संयुक्त परिवार का विघटन, व्यक्तिवाद का बढ़ना, भौतिकवाद का प्रभाव जैसे विषयों को उन्होंने अपनी रचनाओं में स्थान दिया है।

उन्होंने भारतीय संस्कृति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को प्रस्तुत किया है। वे अंधविश्वास और रूढ़ियों की आलोचना करती हैं लेकिन भारतीय संस्कृति के मूल्यवान तत्वों का सम्मान करती हैं। उनकी दृष्टि संतुलित और तर्कसंगत है।

भाषा और शैली

उषा प्रियम्वदा की भाषा सहज, सरल और प्रवाहमय है। वे खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करती हैं जो संस्कृत के तत्सम शब्दों और उर्दू के प्रचलित शब्दों का सुंदर समन्वय है। उनकी भाषा में कृत्रिमता नहीं है और वह पात्रों के चरित्र और परिस्थिति के अनुकूल है।

उनके वाक्य छोटे और सारगर्भित हैं। वे लंबे और जटिल वाक्यों से बचती हैं। उनकी शैली वर्णनात्मक होते हुए भी संक्षिप्त है। वे केवल आवश्यक विवरण ही देती हैं और अनावश्यक विस्तार से बचती हैं। उनके संवाद जीवंत और स्वाभाविक हैं जो पात्रों के व्यक्तित्व को प्रकट करते हैं।

उन्होंने प्रतीक और बिम्बों का सुंदर प्रयोग किया है। छोटी-छोटी घटनाएं और वस्तुएं उनकी रचनाओं में प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण कर लेती हैं। उनकी शैली में काव्यात्मकता है लेकिन वह भावुकता में नहीं बदलती। वे संवेदनशील होते हुए भी संयमित रहती हैं।

आलोचना और समीक्षा

साहित्यिक आलोचकों ने उषा प्रियम्वदा की रचनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। डॉ. नामवर सिंह ने उन्हें आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की महत्वपूर्ण कथाकार माना है। उन्होंने लिखा है कि उषा प्रियम्वदा ने नारी जीवन के यथार्थ को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत किया है।

डॉ. रामदरश मिश्र ने उनके मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद की प्रशंसा की है। उनके अनुसार, उषा प्रियम्वदा ने मानवीय संबंधों की जटिलताओं को गहराई से समझा है और उन्हें कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में बाह्य घटनाओं की अपेक्षा आंतरिक भावनाओं पर अधिक बल है।

कुछ आलोचकों ने यह टिप्पणी की है कि उनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन तक ही सीमित रहने की प्रवृत्ति है। निम्नवर्गीय समाज और ग्रामीण जीवन उनकी रचनाओं में अनुपस्थित है। लेकिन यह भी सत्य है कि उन्होंने जिस वर्ग को चित्रित किया है, उसका चित्रण प्रामाणिक और गहन है।

पुरस्कार और सम्मान

उषा प्रियम्वदा को उनके साहित्यिक योगदान के लिए अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए। उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिन्दी अकादमी दिल्ली का पुरस्कार और अनेक राज्य सरकारों के पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्हें विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया।

हिन्दी साहित्य में स्थान

उषा प्रियम्वदा का हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान है। उन्होंने नई कहानी आंदोलन को समृद्ध किया और हिन्दी कथा साहित्य को नई दिशा दी। उनकी रचनाओं में आधुनिक भारतीय समाज का यथार्थ प्रतिबिंबित होता है। वे अपने समकालीन लेखकों में अग्रणी स्थान रखती हैं।

उन्होंने हिन्दी साहित्य में नारी-लेखन को नई ऊंचाई प्रदान की। उनके बाद की पीढ़ी की अनेक महिला लेखिकाओं ने उनसे प्रेरणा ली। उनकी रचनाओं का अध्ययन विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में किया जाता है। उनकी कुछ रचनाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है।

निष्कर्ष

उषा प्रियम्वदा हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण कथाकार हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आधुनिक भारतीय समाज, विशेषकर नारी जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में मनोवैज्ञानिक गहराई, कलात्मक सौंदर्य और सामाजिक चेतना का सुंदर समन्वय है। उन्होंने अपने पात्रों को इतनी जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया है कि वे पाठक के मन में स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। उनका साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि समाज के लिए दर्पण है। उन्होंने सामाजिक समस्याओं को उठाया है लेकिन उपदेशात्मक शैली से बचते हुए कलात्मक अभिव्यक्ति दी है। उनकी रचनाएं पाठक को सोचने पर विवश करती हैं और मानवीय संवेदनाओं को जागृत करती हैं।

उषा प्रियम्वदा की रचनाएं भविष्य में भी प्रासंगिक बनी रहेंगी क्योंकि वे मानवीय भावनाओं और संबंधों से जुड़ी हैं जो कालातीत हैं। उनका साहित्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है और आने वाली पीढ़ियां भी उनकी रचनाओं से प्रेरणा लेती रहेंगी।

सुझाव और भावी शोध की संभावनाएं

उषा प्रियम्वदा के साहित्य पर अभी और अधिक शोध की आवश्यकता है। उनकी रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन अन्य समकालीन लेखकों के साथ किया जा सकता है। उनके साहित्य में स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श और अन्य सामाजिक मुद्दों का गहन अध्ययन संभव है। उनकी रचनाओं का मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक दृष्टि से विश्लेषण किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- प्रियम्वदा, उ. (1988). *रुकोगी नहीं राधिका.* राजकमल प्रकाशन.
- प्रियम्वदा, उ. (1961). *पचपन खंभे लाल दीवारें.* राजकमल प्रकाशन.
- प्रियम्वदा, उ. (1965). *वापसी* (कहानी-संग्रह). राधाकृष्ण प्रकाशन.
- प्रियम्वदा, उ. (1972). *जमाने का चेहरा.* राजकमल प्रकाशन.
- प्रियम्वदा, उ. (1976). *शेषयात्रा.* राजकमल प्रकाशन.
- सिंह, न. (1973). *कहानी: नई कहानी.* राजकमल प्रकाशन.
- मिश्र, र. (1980). *हिन्दी कहानी का विकास.* मित्र प्रकाशन.
- वर्मा, नि. (1985). *समकालीन हिन्दी साहित्य: विविध आयाम.* साहित्य अकादमी.
- शर्मा, र. (1977). *नई कहानी की भूमिका.* राजकमल प्रकाशन.
- जैन, नि. (1991). *हिन्दी कथा साहित्य में नारी: विविध रूप.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
- कुमार, अ. (1995). *उषा प्रियम्वदा का कथा साहित्य: एक अध्ययन.* विद्या प्रकाशन.

- त्रिपाठी, ग. (2000). *समकालीन कहानीकार: पुनर्मूल्यांकन.* लोकभारती प्रकाशन.
- गुप्ता, स. (2005). *हिन्दी उपन्यास में स्त्री विमर्श.* सामयिक प्रकाशन.

THE RESEARCH DIALOGUE
Manifestation Of Perfection

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/46
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० जुनैद अन्दलीब साजिद

for publication of research paper title

उषा प्रियम्वदा के साहित्य में नारी-चेतना और मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद का विश्लेषण

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY